



प्राणिं कत्रकं शमकं नृणां न॥ क॥
यत्नं लवसि पिथिवीं गह्वरे
यत्नं दन्तं नृणां न॥ क॥
यत्नं गगनं कद्रुतं नीलं कद्रुतं
यत्नं पन्नं गकं नृणां

यत्नं नृणां नृणां नृणां नृणां नृणां
यत्नं नृणां नृणां नृणां नृणां नृणां
यत्नं नृणां नृणां नृणां नृणां नृणां
यत्नं नृणां नृणां नृणां नृणां नृणां
यत्नं नृणां नृणां नृणां नृणां नृणां
यत्नं नृणां नृणां नृणां नृणां नृणां

षडमूया रत्नता ॥ वायुचलमयवर्ति
ननलसिलमात्रा ॥ ॐ ॥ वक्रमह
म्वजनात्रायनवृत्तः यावयी बहुव
लने. बहुमात्रमदनी ॥ ॐ ॥ ० ॥
ह्याग ॥ महुलसमयवक्रमहुलसय

रेफुः सादगुरुगचक्रयापियात्र
नगुकलूषणीसत्रयागिनी ॥ श्रीयाव
कलादवीमात्रणी ॥ ॐ ॥ अकिनी
त्रामाखलुत्रात्रवृषीणी. चात्रमात्रयः
उचापित्रयन ॥ ॐ ॥ कायवाकचि

न निहि रु व नः दान प मिया नु स म्र व
 मा व्र व ॥ या गया मि ही मत्री या . ह म व
 स सा वः म्र व हा म न ती रु व वा ॥ ५ ॥
 ॥ ० ॥

वा न . क म्र वी . क म्र वी .
 ध नि ध प रु मी ॥
 ना न ड ख सि ध नि . वा न
 न प के स . प स के म्र वी .
 प र्य नु . रु स के क म .
 मी रु व नु . क म्र वी .
 सि न ॥ ध नि ध प रु मी .
 पा स १० ॥ वृ न न १०
 दि कि रु १२ ॥ रु व नु
 डा स प रु ॥ म्र वी .
 पा न ३० ॥ ना न म रु व
 व य का य न ॥ म्र वी .
 रु व ॥ म्र व व न ॥
 ना न . व म्र व . रु वी .

141-
 Aba. 11.11.

रवलिंदा लोका
 रयदाकि मानको
 रकं प्रमला मानको
 रधनि विगागाला
 रचक सिन्धुले जयय
 रंसे जाल मालको
 यन ॥ कोया ॥ दुर्लभा ॥
 याले धाल मरवयय जेहि
 कोय मल्लिक
 जालेनि
 मलायन
 दासक म
 ठुनिद मयने जय

रवलिंदा लोका मला मययान्यया वि
 धानयगिशवा ॥ ० ॥ यादूद्वन निमि
 नगयज्ञाशला साधलिशको नमनयान
 माला ॥ ० ॥ निमिननयज्ञाशला ॥ यादूद्व
 क नमयास मखमालस दवाहान यकुं
 गीन विथलैरव कायकलकय यज्ञहास्य

र
 व
 ल
 ि
 द
 ा
 ल
 ो
 क
 ा

६३ काय ॥ मनु लोहा वक्र नादि अस्त्र कुल
माहा नाग मधिय नि ॥ ०० रुद्रा म्ना दिय ॥ वत्सा
य नार्थ ॥ इवें इवें स्वाहा ॥ धन लंख रुया व ॥ म्य व
व ॥ ख फाय म म्य व ॥ हिमाल को रुय ॥ ॥ लंख
इवें वया व ॥ यल य ॥ ॥ उं ग म्द म्य र्थ ॥ मा हा
म्य र्थ ॥ सर्व नाग ति ॥ जाम्ना दिय व ग पिय ॥

इवें इवें स्वाहा ॥ ॥ ॥ धन दा व ॥ लस्त्र स्य इ काय रुः
ला ॥ ॥ नाग म लु ल या य ॥ नाग वा ला ष न ॥ नाग
त्रय ॥ हि न स्त्राय ॥ ॥ नाग ल यें धन थ न ॥ च लु ल
दि ग ॥ नाग का द था य न ॥ ॥ अ रु दि ग वा य ॥ नाग
थ रु था य मा त्रा ॥ ज ल कू ड ॥ हि त व ति ना य ॥
द वा हा ल रु ना ॥ थ व थ व दि ग म् ॥ दि ग कू स थ

यन नागधमालको ह्यहना ॥ ॥ धन अः
आदियाय सुकृपा नास्त्याय हला सुसुमनु
न गिसमाधिराया नाधून दाडा कुंठ थाय
नाया दंग का दाडा ॥ धन सुमिख धन कुंठ था
धन धन का ना लीष वृत्र के वा म्यायाय हना ॥
स्वस्ति वा धन रा रा व वृत्र न दया इ अरु कुल मा

हागै नो धियनय सर्वतथागत सत्यन भक्ति
विगत न नृदामत्यादाय वृद्धा म्वा दिय अ
मक नार्थ वसाय नार्थ सुसुवस्व ॥ क्रियायामः
सुजात र्थी हना ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

नलन (ग)

नलन (ग) या यथा म न म के

उत्तिमि-

सा न्ना क्रयाड

वर्तनगमि

इ-थनि न्ना न्ना

इ विनमि

ह-या ग वमि

निनाममि

माहा कुश

थनिमि याहन

मिउपव १०२

रायवमल

आसाग

गम्-गजा

ययका

खानदा

अम्बल

रायदा रुने

रदिनयति यज्ञहाय ॥ इइरु २ धान इल्लदन
यमखन-मनिक्रालस-गंखमालग-थनि
यमखन ॥ ॥ थवथवथथथयस-कायज्ञया ॥
॥ ॥ थनलियाकवलिविय-काकिनवलिः
ग-खालवलि-यानयिनगयक-यनायस्वाय
रुगो ॥ इइ-स्वधि-दि-ग-कायननसाधन

थनिधनदावयालनरुत्रा ॥ ॐ मिमाहावल
साधनगुरु ॥ ॐ ॥

वृषाष्टम

वृषाष्टमयागवास्तया ॥

वृषाष्टमयागवास्तया ॥

वृषाष्टमयागवास्तया ॥

वृषाष्टमयागवास्तया ॥

वृषाष्टमयागवास्तया ॥

वृषाष्टमयागवास्तया ॥

वृषाष्टमयागवास्तया ॥

वृषाष्टमयागवास्तया ॥

वृषाष्टमयागवास्तया ॥

वृषाष्टमयागवास्तया ॥

वृषाष्टमयागवास्तया ॥

महायज्ञनाम ।

गोवमान पर्वत ।

धर्मिनी पानन वापिय हू पांडू वास्या च

धर्मिनी पानन वापिय हू
पांडू वास्या च हूना ॥

आदिना नामा ^{वृद्ध} मे नि
अ कठवान

मे रुधुलि
संवत्त मध
कि मरुड
वातु किनाग
सू मयर्वन

धर्मिनी पानन वापिय हू पांडू वास्या च
पांडू वास्या च हूना ॥

रुधुनामा वं मलि

अ कठवान ॥ रुधुलि
मधुयर्वन तक्रक नाग

सधिस मरुड

यूक्त मय ॥ यूप्रिस

दिमिस रुधिलीख रुधन

वा गमधि सिय ॥ धर्मिनी पानन

वापिय हू वागपिय रुधिलीख

रुध ॥ धर्मिनी पानन मान ॥

मं राजा ॥ श्री मन्त्रि

वडकठवाल

उ. हं. अलि.

ॐ. ष. समु. ड

ककठ. नाग

कयेनास. यर्चन

धपनिपात्रन

वापियननो. मड.

वा. रुक्. स्यावू

यज्ञहायमान

श्व. राजा. नैमन्त्रि

उ. कठवाल. श्री. र. अलि.

किल. समु. ड. कलिकनाग

गीयवत.

धपनिपात्रन. वाधि

यमड. वामस्या. व. वना

पियमान. यज्ञहायमान

वलिपियमान ॥

॥

व. स्यानि. राजा. अलि. मन्त्रि. उ. क. का. रु.

वा. व. हं. अलि. के. सास. यर्चन. ॐ. ष. समु. ड.

ककठ. कनाग ॥ धपनिपात्रन. वापिय.

धान. उ. ना. दं. स्यावू. व. खा. वं. स्यावू. यज्ञ

हायमान ॥

॥

हं सिद्धि नू नू हा कोमि ना मा हा सि गी क
 ला श्री का ग्य **शु** दि. दि गू ना क. कि व व
 ना. श्री रु ल सि दि. श्री पा दो का सु न
 न. महा म न नि. कू द य २ स्वा हा ॥
 महा का लि का ग्य व य वि कू ॥ श्री नि
 ल क ७ महा द न व व न. श्री य न दू द
 कू ना ग ठ ठ ठ ह वि य ड व रु पा नि डू
 रु ठ ३ स्वा हा ॥ द व सा नि यु या य ॥

१ उं न मः च वि व ज क। ध ह ल वा य न
 म ०। नि ष १ व न २ रु न २ अ म न कू क
 दू ठ व रु वि आ न णी स म २ कू द न ड
 श का म्य व म्ब रुः ज ग मा न म्य. श्री या जा
 धि ना जा. श्री २ श्री वा न रु ह वि क म सा हा
 द व स. व ति खा स म य अ ल म्ब न किया
 का ल न सं सा ल उ थ ल ना थं अ ल य ना य
 आ न र नि मि ति थं दि न गू णी य अ स न म

मं क वा दा का वा व न का
 मं क वा दा का वा व न का

५३५५

和和

भागदंडकास्यकारिदम्भ
ध्वजदंडास्यदीर्घरवकाय
रजावाजाः हिमालादव
सः इत्येतान् ॥ यानेनादू
यङ्कनीदिवदाल्पदगाद्यान
वालिपानां ३३॥ अथानि
समयध्वजानामादिकं
पिन्नचोद्यदीर्घनीन
मन्त्रानाममदः कलि
वनपिण्डकाः ॥ मन्त्रा
मन्त्रीत्यासहकडानां ॥

अथ ध्यानिनामके षडन्यासः
एवमनामनामानः ईश्वरक
रुनिद्यानः चोनामानः वा
ननाकनिनदियुताः

रणीयासु स मय्यत ० लम्बाषाटकषू. बूहवालः
 धूकू. मत्क वाहास. कोरू कदिन इना ॥ या
 गाभी २ वन्न वा दो मा हां जया वेलस. कोहाडा
 नयिं श्रीवडा चाई दा ठिह म्वाहात्र स चीन झ
 नीवजा चाई लक कल. झ नूवाहाके चीन झ
 धनि झडी ना बा म ग न डा. चो ना. थ्य हां डा
 गुली ना. न किं थ्य मा वा न ग म न ३

स्यं नी. कय हलं नी द्वा ग म न चानं द्धितं ग म क तवा
 म ग म क । रा ना : य डा. म गं डु ह या व. सि पा ल
 नि झ सें श न डा स न. वे ता नी. उ घा नी य घा
 नी. रा दा. वि वा हा. ग व वे न स. म्वा न ध के.
 द स क ल वा सी वि व ह रा. थ्य वेल स. तंग
 वा हा ल स. च क म्वा नी. दा ह. कि ना व ना ह.

१ संख्यत १२ श्री श्री दृष्ट प्रयाग यथा दृष्ट वा
लथक दृष्ट संक वा हा न स श्री वजा वा यः
दा ॥ ४ ॥ श्री को हा व दा ॥ दिन शत्रा ॥ को हा डा ना
न वा गम क थ हा डा यान वा गम क
१ संख्यत ३१ श्री श्री दृष्ट प्रयाग यथा दृष्ट वा
लथक दृष्ट संक वा हा न स श्री वजा वा यः तव धिः

को हा व ना दिन शत्रा को हा व ना दिन स वा मः

दान य कि ज्ञ मा न स का सिय ग्व सु ज जन ह निया
प्र वृ ज म नि न न द ना प्राय न सा हा द व त्रा डा धि
ना डा श्री श्रि यि वा न इ ल्ध विस विक म स हा द व स
व लि वा स म य ज न स ने का व न सं सा व उ धा व का

वन नवनगवलनके जलयतायकावननिः
मिस्तथं दिनशुशानिस्तथं नमः मंक्रवाहप्रसः
लंबहाननयात कालं वासंतया इगुगा मुरु
स्तवतलस्त आयातकस्त ययुमि गंरडा न
थकुक श्रीवडावास्त नवधिश कोदाव
नादिनइनी वागनका कास्ययवस्त जश

मानस्यनिवात्रशो दामनि नवननादायन
सादादव महानाडा धिनाजही उनाई नाडि
नुविलविकलमसादादवस्य वलिखासम
मराजालक्ष्म्य किर्याकालने संसाउधालका
लने नवनग वननके जलयतायकावन
ननिमिस्तथं दंयुयरा ननाय संक्रय

यामिसं ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः
॥ श्रीगुरुभ्यो नमः
॥ श्रीगुरुभ्यो नमः
॥ श्रीगुरुभ्यो नमः
॥ श्रीगुरुभ्यो नमः
॥ श्रीगुरुभ्यो नमः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 श्रीकृष्णाय नमः ॥ २ ॥
 श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ३ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ ४ ॥
 श्रीविष्णवे नमः ॥ ५ ॥
 श्रीशिवाय नमः ॥ ६ ॥
 श्रीब्रह्माय नमः ॥ ७ ॥
 श्रीमहादेवाय नमः ॥ ८ ॥
 श्रीनारायणाय नमः ॥ ९ ॥
 श्रीहरिभक्त्यो नमः ॥ १० ॥

五

स्नागवसि

स्नागवसि सरथय॥

स म व व

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ वसुदेवाय नमः ॥ नागवलि विविध - याग यायज्ञा
रटिषा कात्र हस्तु न्य विहावा ॥ ॐ सून्यागा हान नवजः
स्वरावामका इह ॥ यंत्रं वं नं संत्रं गं हं न क्रिय ग्याः
रावलि मधु यायत्रिगुं कालाशाशत्रवकं गमधुगं
कालनिस्यनं याचतासमयनं - वेयाचना - हं नं हं
सं कुं न ॥ वज्रवल्हं - शतमनष्यास्यं सफरुनादि

कं ॥ दक्षिण कनदव - वासायं कलं - वामनवल्हं
त्रिगीत - नागयाहधर्म कजा सनं सकलसम
यायत्रिवालिहं समयसत्त्व विहावा ॥ हानसत्त्वः
नश्वं प्रवस्य ॥ जाययाय - ध्ययाय - आकषणः
याद्यादि - यस्यानास ॥ ॐ आः वज्रवल्हं वासादा ॥
दधम ॥ ॐ आः अमनाय स्वादा ॥ पूर्वस ॥ ॐ आः

वायुमिय स्वाहा ॥ अग्निस् ॥ ॐ आः ॥ तक्र काय स्वा
हा ॥ दक्षिण ॥ ॐ आः ॥ कर्कट काय स्वाहा ॥ नेमय
स् ॥ ॐ आः ॥ यद्राय स्वाहा ॥ वक्रिमस् ॥ ॐ आः ॥ म
हायद्राय स्वाहा ॥ वायव्यस् ॥ ॐ आः ॥ भीखयात्रा
य स्वाहा ॥ उक्तरस् ॥ ॐ आः ॥ कलिकाय स्वाहा ॥
ॐ नमस् ॥ ॐ आः ॥ दूं य पा दूं नें दूं स्वाहा ॥ म धा

मुनि ३

स् ॥ ॐ आः ॥ दूं धूय दूं नें दूं स्वाहा ॥ ॐ आः ॥ दूं गंः
॥ दूं नें दूं स्वाहा ॥ यं चायस्त्रयूजा ॥ त्रास्या द्यं
॥ वाजनं ॥ जत्राभियमिनागं च ॥ स्वस्वदिसि
वावस्त्रिगसस्त्राभयसदानिर्वा ॥ वत्रुक्षयनमा
मुने ॥ ॥ धूमिदशविषय ॥ धन ॥ अयुदिगर्भ
विषय काययाय ॥ त्रिदिव्य ॥ रुग्निविषय ॥ यद्व

याग॥ उं वज्रवल्लभं नंदं ॥ रुद्रमुनिविय॥ यलः
कलिः साखलः पूवाकिः इहसः होसी वलिस
गर्भः प्रिय॥ यालसा॥ उं वज्रवल्लभं नंदं वादियव
षायनं नंदं ॥ १०८ ॥ पूर्वसा॥ पूर्वअनः
ननागवाज्ञानकिराकसमदृसंकमलविद्रुम
ज्ञानं विराया॥ आकषनः पायादिः यस्यानासः

यं यायदात्रयज्ञा॥ प्रस्थाः मुनि॥ ॥ दक्षिणः
यागः यज्ञा॥ उं अनंताय नंदं वलिसगया॥ रु
द्रमुनिः यलः वलिविय॥ उं श्रीअनन्तावस्थां यं
यं नंदं द्वियदं नंदं स्वाहा॥ ॥ दक्षिणः यज्ञना
गधियः कृद्दृसंकासं वलं वाकिगनिषं विः
राया॥ आकषना॥ पायादिः यस्यानासः लास्या

यं लुवादन मुनि ॥ ॥ पश्चिमया न ॥ जाय स्वा
नगय ॥ ॐ यं यत्राय हूं नंदं स्वादा ॥ ह कि विय ॥
कस्मि वसि विय ॥ ॐ यं यत्रा वष्यायय हूं नंदं स्वा
दा ॥ ॐ स्वादि य हूं नंदं स्वादा ॥ ॥ ॐ पश्चिम न
ककनाग नीत्र कनया वक किन सित्र विहा वा ॥
आकषन यायादि धूय यष्या न्या ग यं याप्य ॥

दात्र पूजा ॥ मुनि ॥ ॥ जाय ॥ ॐ नंदं ककायः
हूं नंदं स्वादा ॥ ह कि मित्रा वसि ॥ ॐ नंदं ककाय व
ष्यायं ॐ यं या दि य हूं नंदं स्वादा ॥ ० ॥ ॐ नंदं
वा मुनि नाग नाजा नीर्त नीला न्यत्र किन सिष वि
हा वा ॥ ॐ या धू यष्या न्या ग यं या यदात्र य
जा नास्या यं लुवादन मुनि ॥ जाय ॥ ॐ वां ॥

वायुकि नंदं नंदं स्वाहा ॥ रुकि सावल ॥ वलि ॥
ॐ वां वायुकि व व्या यय स स्वा द्वि पदं नंदं स्वाहा
॥ ० ॥ ॐ ॐ ॐ नमस्तु य प्र नाग धियनि क
दक वरु निगलला कित सिष विराय ॥ आ क ॥
पाशा धूप यष यं वा नास्या मुनि ॥ ॥
जाय ॥ ॐ सं ख पा जाय दं नंदं स्वाहा ॥ रुकि सा

यहाम वलि ॥ ॐ सं ख पा जाय व र्वा यं यं ॐ वा द्वि
पदं नंदं स्वाहा ॥ ० ॥ ॐ ने स ग्य क क ठ क
नाग जाजा धव वरु नित्र या कित सिष वि
राय ॥ आ क पाशा धूप यन यष यं वा रु
मि ॥ ॐ ॐ क क ठ का व र्वा यय य ॐ वा द्वि पदं नंदं
स्वाहा ॥ ० ॥ ॐ वाय व क लि क ना म जाजा

नं. यिरुत्रक विविनवर्षु. अद्वचवृकिगकं ०
विताया ॥ आक. याया. धूप. यथा. यथा. गुणि.
जाय ॥ ॐ कंकरीकाय हं नं हं स्वाहा ॥ रुगुनि. कवा
वलि ॥ ॐ कंकरीकाय हं नं हं स्वाहा ॥ रुगुनि. कवा
हं स्वाहा ॥ यथायदा यथा ॥ मुनि ॥ जगद्विपतिना
गच. स्वस्वदिव्यकिगसत्वाथाय. वलनाय नमः

मुनि ॥ ॐ ॥ ॐ निनागवलि समाक ४ ॥ ॐ ॥
ॐ नमः ४ श्रीवज्रक्षाय शामध्वस. वलनाय कुरु. कुरु
क्षाय. नागकन्या. क्षदिग. विज. हल. रुद्र
कि. धातु. धूप. कुरुहा ॥ नागय. ग्वउते
॥ १ ॥ यवस. अनन नाग. नीलवर्षु ॥ धा
तुल. विज. नील. धूप. गुगुली ॥ १ ॥ दक्षि

धम यज्ञनाग मुकुवर्धु धातु लिनी ॥ विज
धनाग धय गीत ॥ ३ ॥ यश्चिमस गङ्गक
नाग नकुवर्धु धातु मनिक विज सिङ्गल
धय कमुत्रीयन ॥ ४ ॥ उरुत्रस वाङ्गुकि
नाग यिरुवर्धु धातु डादा वीज मयत्र ध
य कय्यत्री ॥ ५ ॥ ॐ नाना महायज्ञनाग

यिरुवर्धु विज मकि धातु कंठसंद धय
गौरव ॥ ६ ॥ आर्यस गौरवयात्रनाग यि
गवर्धु विज कर्कठन धातु दाल धयथ
नतकि ॥ ७ ॥ नैमत्यस कर्कठक नाग
मुकुवर्धु विज वेड्य धातु कंठ धय ऊ
मुत्रीसि ॥ ८ ॥ वायव्यस कलिकनाग यीरु

वर्धु स्याकवर्धु विज नाउर्क धाउ ३
 वयगधर्वन ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ धल साखल ग
 लदा कलि पाधाल धन नागय गुग्ग
 लसंधन धन शवना ॥ गुग्गमल नागद
 गुली कलसयज्ञ नागमल यज्ञ वलि
 विय दगुलिवलिविय ॥ अकयज्ञ यज्ञस्य

खानकतन गुग्गयज्ञ दक्षिण कुमायन
 आसिवाद सग्वनतन केभारिकक दक्षि
 विय ॥ समय रंवा ३३ पावनयाय ॥ गद
 वक ॥

आशादास कोष
 2624 I

नयुरुज्जिञ्जगविज्जु ०० गहिज्जगवप
हामामि॥ ॐ ॥ संशो जनया ॥ ०
हृदि श्वा गुरु वि॥ हृद सित्र मकु ग कि नत्त संन
रा सितः च नृश गम म हि य वरु स ग य ल
मैः युद्र व म दं ॥ ग म रु स नि व रु पि थि गं थूर्ग

तः द रु ध रु ॥ ॥ ग म रु स रु ल न
वा वि रु रु म ध वः रु रु रु ॥ ॐ ॥
वा ग ॥ वि रु व न द्वा सि ग म रु नि रु न वा
य नि रु न व वि ॥ ना व यि व रु स रु य रु
स्व व वि न व वि ॥ रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु

संस्तव्यं सः सा सवधिं ॥ ध्रु ॥ वक्ष इदं
कृषविसहनूवायनिः सखवधि ॥ ३२ ॥
२ गग मा लयी ॥ ठाल इक्ष मा न ॥ वृ ली
गम विव लु के ला ति २ सि ख म पि ड् न
की ग पि दाय न ॥ हं ३३ द्रिया २ कं रु ग क

जं क गालि २ रु क न स रु ग न इ ति
स म या न रु गु डा गा म्ब वि द यी २ व
गु लि व रु ति व म ख रु या न ॥ ३४ ॥
वन ना व्या नू व स रु २ रि व रूं ॥ ३५ ॥
॥ रि व कं का ल रु णा व नि ख रु २